Written by बटिया ब्यूरो
Friday, 12 November 2010 13:48

[illegible]

[illegible]: [illegible] [illegible]नकि कल्पना तो कीजिए। उस जगह के बारे में जहां छेडखानी तो दूर, उल्टे लडकियां ही बात बात पर चाकूबाजी पर उतर आती हों और अबे-तबे से बात करती हों। एक ऐसी जगह जहां फटकने के नाम से भी लडकों के छक्के छूट जाते हों। लेकिन यह कोई कपोल-कल्पना नहीं, बल्कि बाकायदा एक हकीकत है। जी हां, इंदौर के गुजराती कालेज के पास तो शोहदे फटकते तक नहीं हैं। यह कालेज लडकियों का है और इसके नाम से ही शहरी शोहदों के पसीने छूटने लगते हैं। वजह, लडकियों का साम्राज्य। मजाल है किसी की कि इधर की ओर आंखें भी लगाये। हां, यहां के किस्से शहर के लोगों के लिए मनोरंजन का कारण जरूर बन जाते हैं। इंदौर में लम्बे समय तक रहे और फिलहाल महुआ न्यूज चैनल के लखनऊ स्थित राज्य ब्यूरो कार्यालय में तैनात विज्ञापन प्रभारी कमल ओमर बताते हैं कि इन बिंदास बालाओं की हरकतों पर खफा होने के बजाय उनके अभिभावक उन पर गर्व करते हैं।

गुजराती कॉलेज में लड़कियों द्वारा आपसी झगड़े में चाकू निकाल लिए जाने से शहर में लड़कियों के बदलते तेवर चर्चा में है। चाकूबाजी की घटना से सभी आहत हैं लेकिन उनके बिंदासपन पर किसी को ऐतराज नहीं।

शहर में कुछ साल पहले यदि कोई बदमाश किसी लड़की पर फिकरे कसता था तो वह रोते हुए घर पहुंच जाती थी, अब मामला दूसरा है। बातचीत के तौर-तरीकों से लेकर पहनने-ओढ़ने के अंदाज भी पूरी तरह बदल चुके हैं। अबे ओए.., बताऊं क्या..?, ढंग से रहो, समझा ना?. जैसे शब्द हो या किसी बदमाश को सबक सिखाना वे कहीं पीछे नहीं हैं।

पहले हाल कुछ और थे। हाउस वाइफ मीनाक्षी चौहान कहती है जब मैं कॉलेज में थी तो भैया मुझे लेने और छोड़ने जाया करते थे। एक बार जब वो साथ नहीं आ पाए तो एक लड़के ने मुझे अकेला समझकर रास्तेभर मुझे कमेंट किया। उस दिन मैं खूब रोई और कई दिनों तक डरी-सहमी रही। आज ऐसा ही हादसा मेरी बेटी के साथ होता है तो वो उस लड़के के कमेंट का जवाब इस तरह देती है कि लड़के भी डरकर भाग जाते हैं।

छेड़ने वालों को बांध दी राखी:होस्टल में रहने वाली लड़कियां हो या दूर कॉलेज जाने वाली. पैरेंट्स अब अपनी बेटियों की सुरक्षा को लेकर काफी हद तक निश्चिंत हैं। फैशन डिजाइनिंग की स्टूडेंट शालिनी तिवारी बताती है मैंने लाठी चलाने की ट्रेनिंग ले रखी है। उसे आजमाने की नौबत तो नहीं आई है लेकिन किसी स्थिति में मैं घबराती नहीं। मरीज जैसे होते हैं, उन्हें दवाई भी वैसी ही देना पड़ती है।

कहर बरपातीं इंदौर की छप्पन -छुरियां

Written by बटिया ब्यूरो
Friday, 12 November 2010 13:48

[illegible]

2 / 2